चार यहूदी कहानियां

चार यहूदी कहानियां

जोसेफ की कहानी

बहुत पुरानी बात है. जेकब नाम का एक आदमी था. उसके बारह बेटे थे. पर उनका पसंदीदा बेटा जोसेफ था. एक दिन जेकब ने जोसेफ को एक विशेष उपहार दिया. वो एक रंग-बिरंगा कोट था.
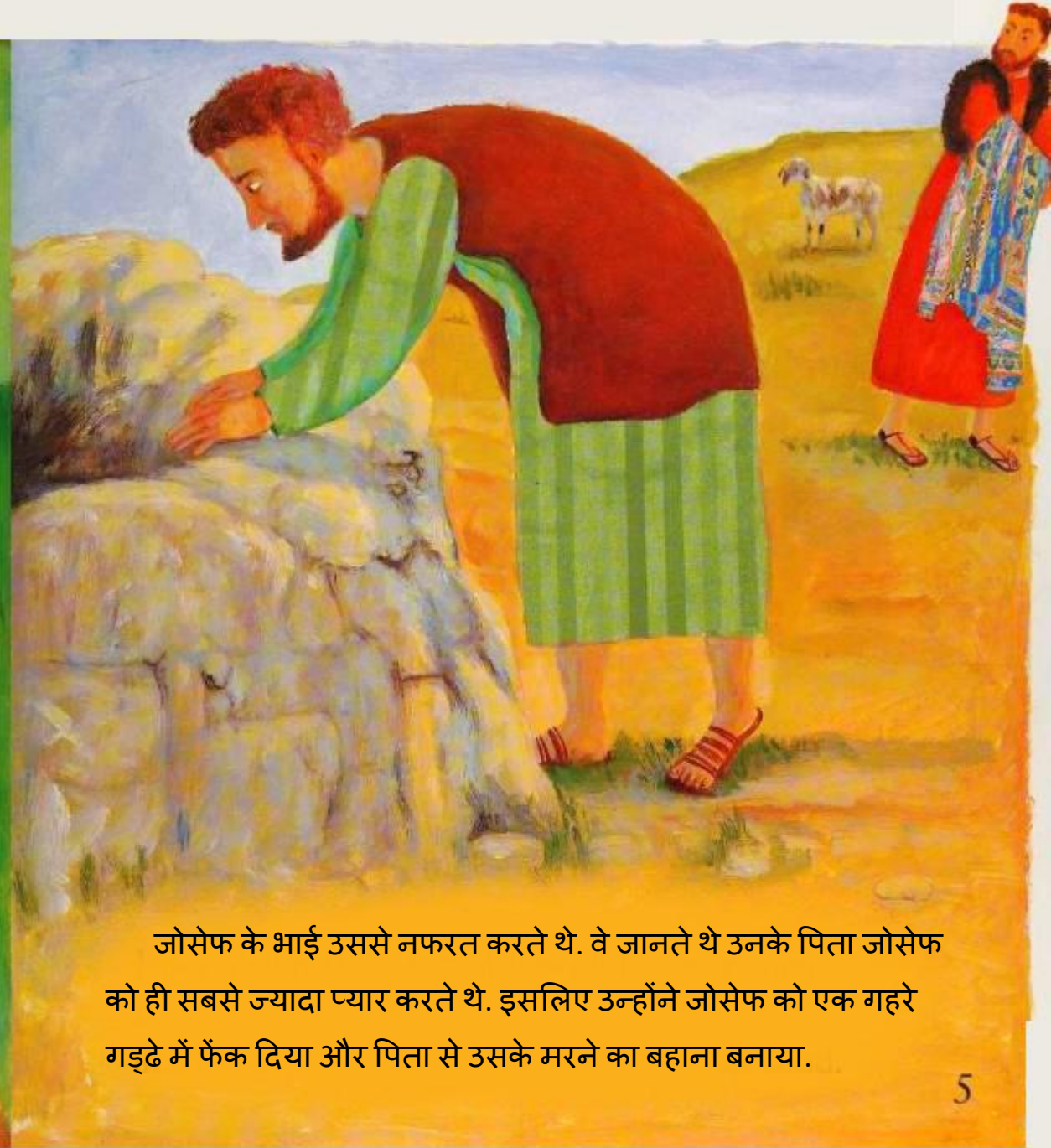
जोसेफ के भाई उससे नफरत करते थे. वे जानते थे उनके पिता जोसेफ को ही सबसे ज्यादा प्यार करते थे. इसलिए उन्होंने जोसेफ को एक गहरे गड्ढे में फेंक दिया और पिता से उसके मरने का बहाना बनाया.

थोड़ी देर बाद, कुछ मुसाफिरों ने जोसेफ को ढूँढा और वे उसे मिस्र ले गए. लेकिन मिस्र में, एक बुरे व्यक्ति ने जोसेफ के बारे में झूठी शिकायत की जिससे जोसेफ को जेल में डाल दिया गया.

जेल में जोसेफ ने अन्य कैदियों को उनके सपनों का मतलब समझाया. जोसेफ की बताई हर बात सच निकली.
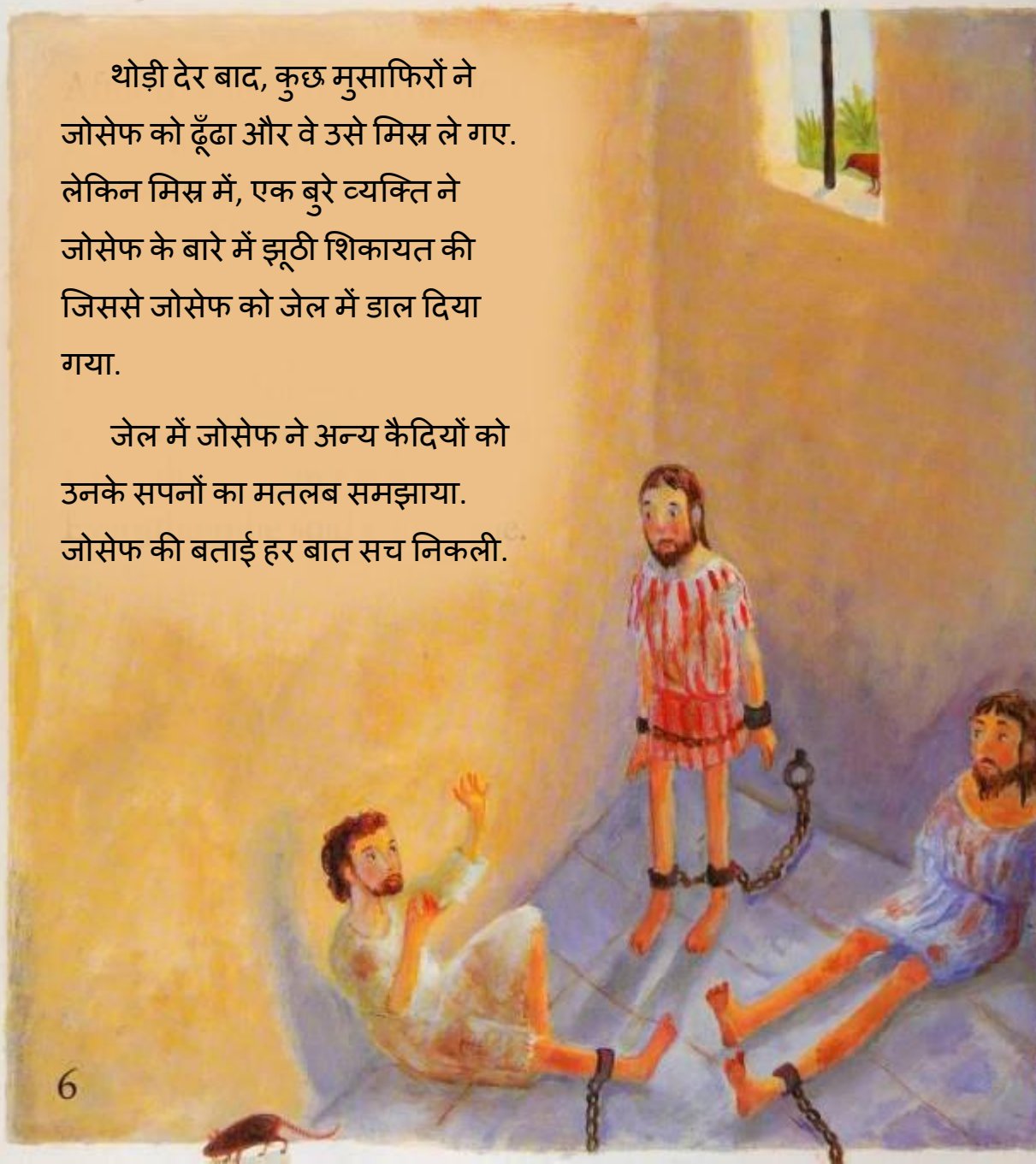
एक रात, मिस्र के शासक फिरौन (फेरो) ने एक अजीब सपना देखा. उसने सपने में सात मोटी गायों को नदी से निकलते हुए देखा. उनके पीछे-पीछे सात पतली गायें भी थीं.
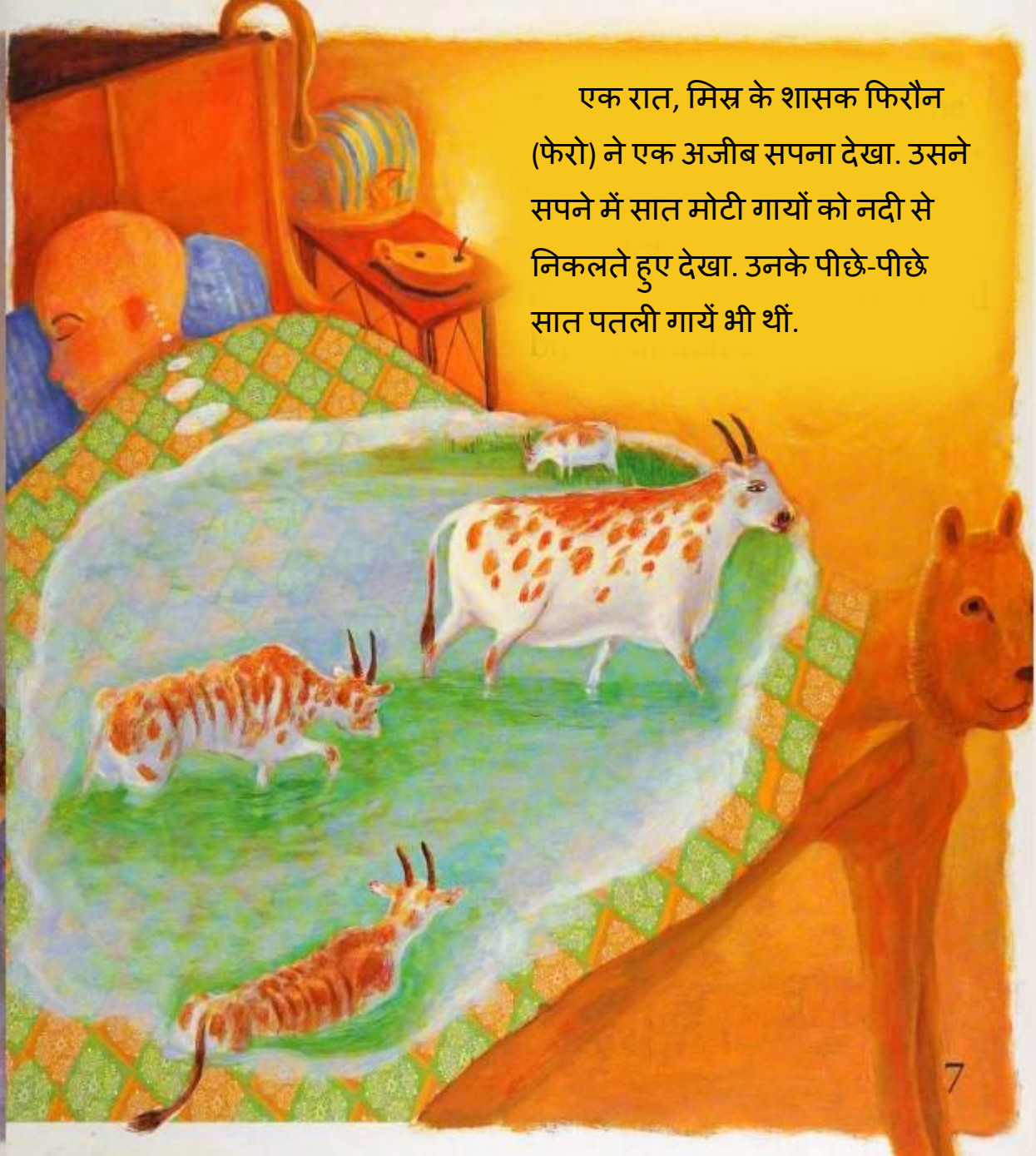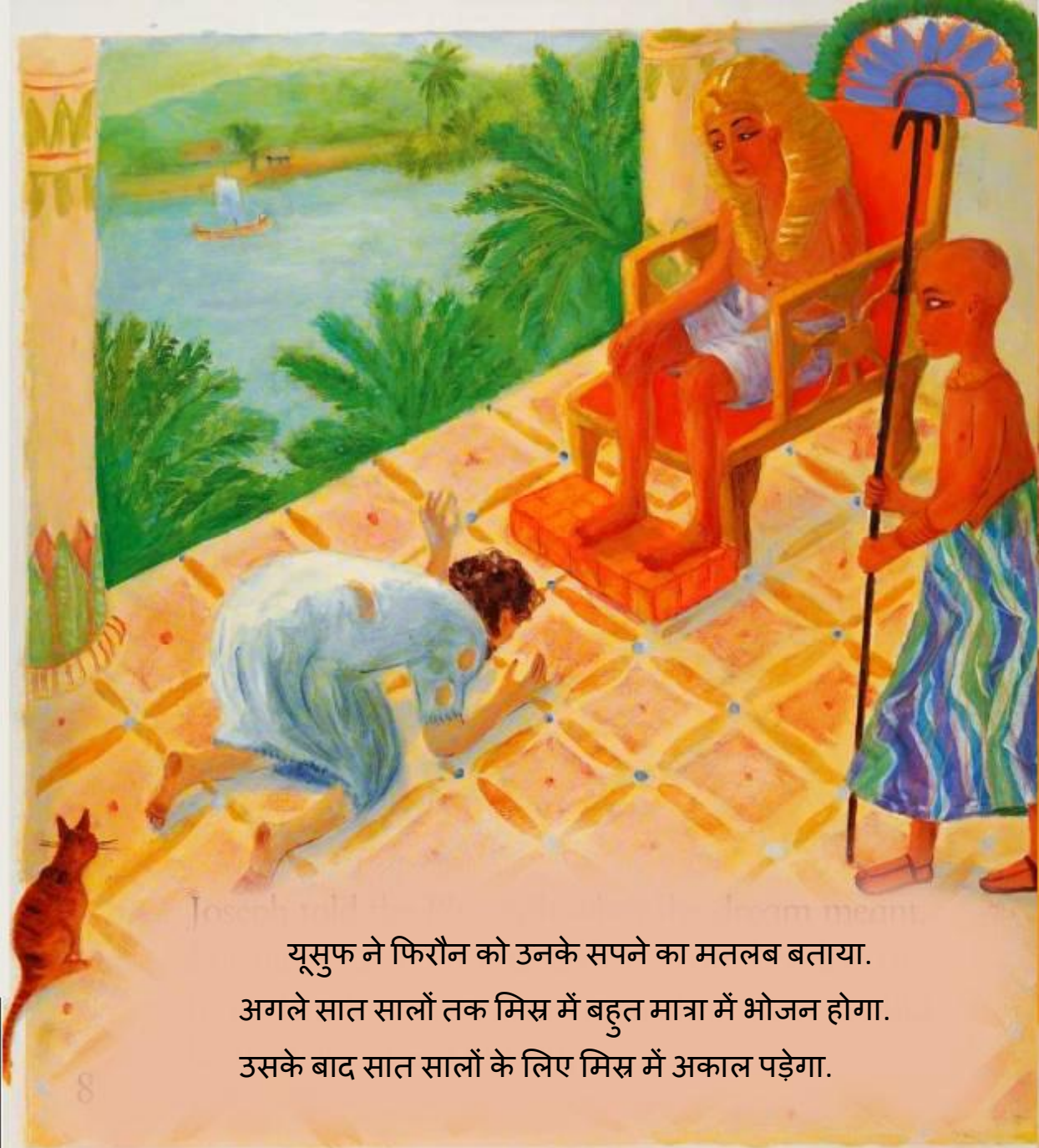
यूसुफ ने फिरौन को उनके सपने का मतलब बताया. अगले सात सालों तक मिस्र में बहुत मात्रा में भोजन होगा. उसके बाद सात सालों के लिए मिस्र में अकाल पड़ेगा.

इससे फिरौन इतना खुश हुआ कि उसने जोसेफ को जेल से रिहा कर दिया. पुरुस्कार के रूप में, फिरौन ने पहले सात वर्षों के लिए जोसेफ को अतिरिक्त भोजन के भंडारण का महत्वपूर्ण काम सौंपा. जोसेफ को यह सुनिश्चित करना था कि जब खेतों में फसलें न उगें और सूखा पड़े तो भी मिस्र के लोग भूखे न मरें.

एक दिन, जोसेफ के भाई उससे खाने की भीख मांगने आए. क्योंकि बहुत साल बीत चुके थे इसलिए उन्होंने अपने भाई जोसेफ को पहचाना नहीं. जोसेफ उन्हें उनके बुरे व्यवहार के लिए अच्छा सबक सिखाना चाहता था. इसलिए उसने अपने भाइयों पर एक कीमती चांदी का कप चुराने का झूठा आरोप लगाया.
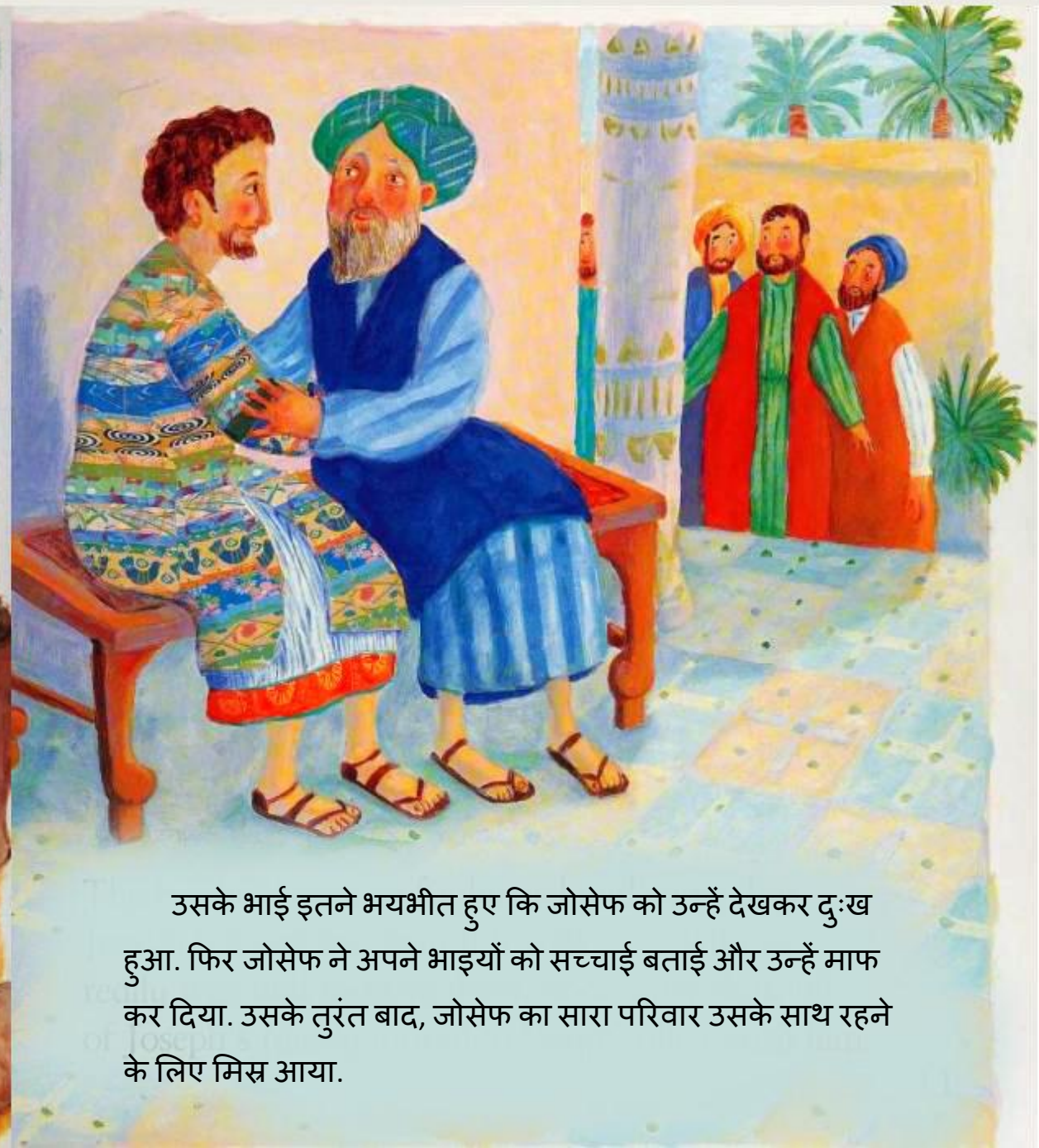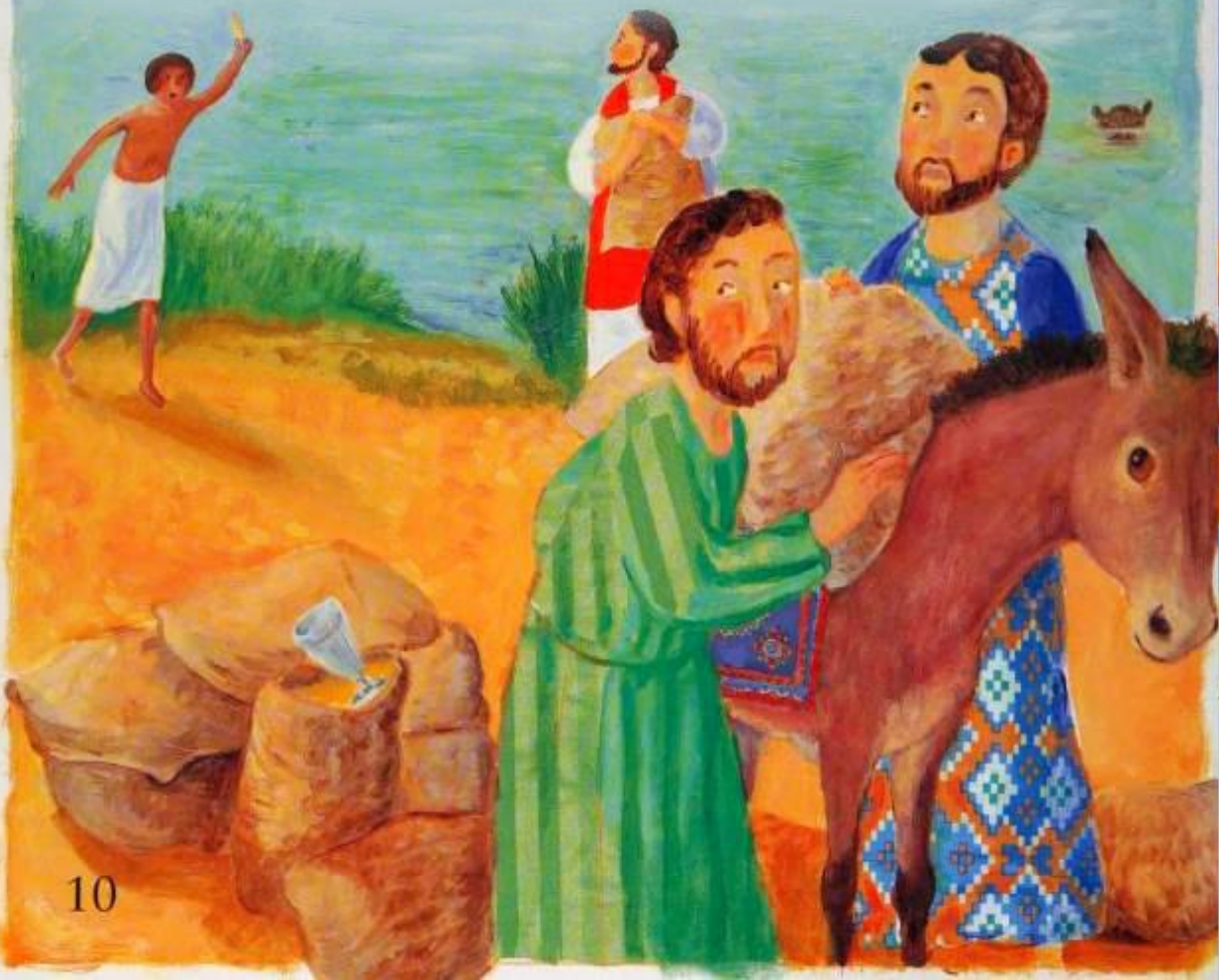
उसके भाई इतने भयभीत हुए कि जोसेफ को उन्हें देखकर दुःख हुआ. फिर जोसेफ ने अपने भाइयों को सच्चाई बताई और उन्हें माफ कर दिया. उसके तुरंत बाद, जोसेफ का सारा परिवार उसके साथ रहने के लिए मिस्र आया.

टोकरी में बच्चा

बहुत पहले, मिस्र में कई यहूदी लोग रहते थे. उस समय का फिरौन बहुत क्रूर था और वो यहूदियों के साथ दासों जैसा व्यवहार करता था. वो उनसे बहुत मेहनत करवाता और अपने महलों का निर्माण करवाता था.
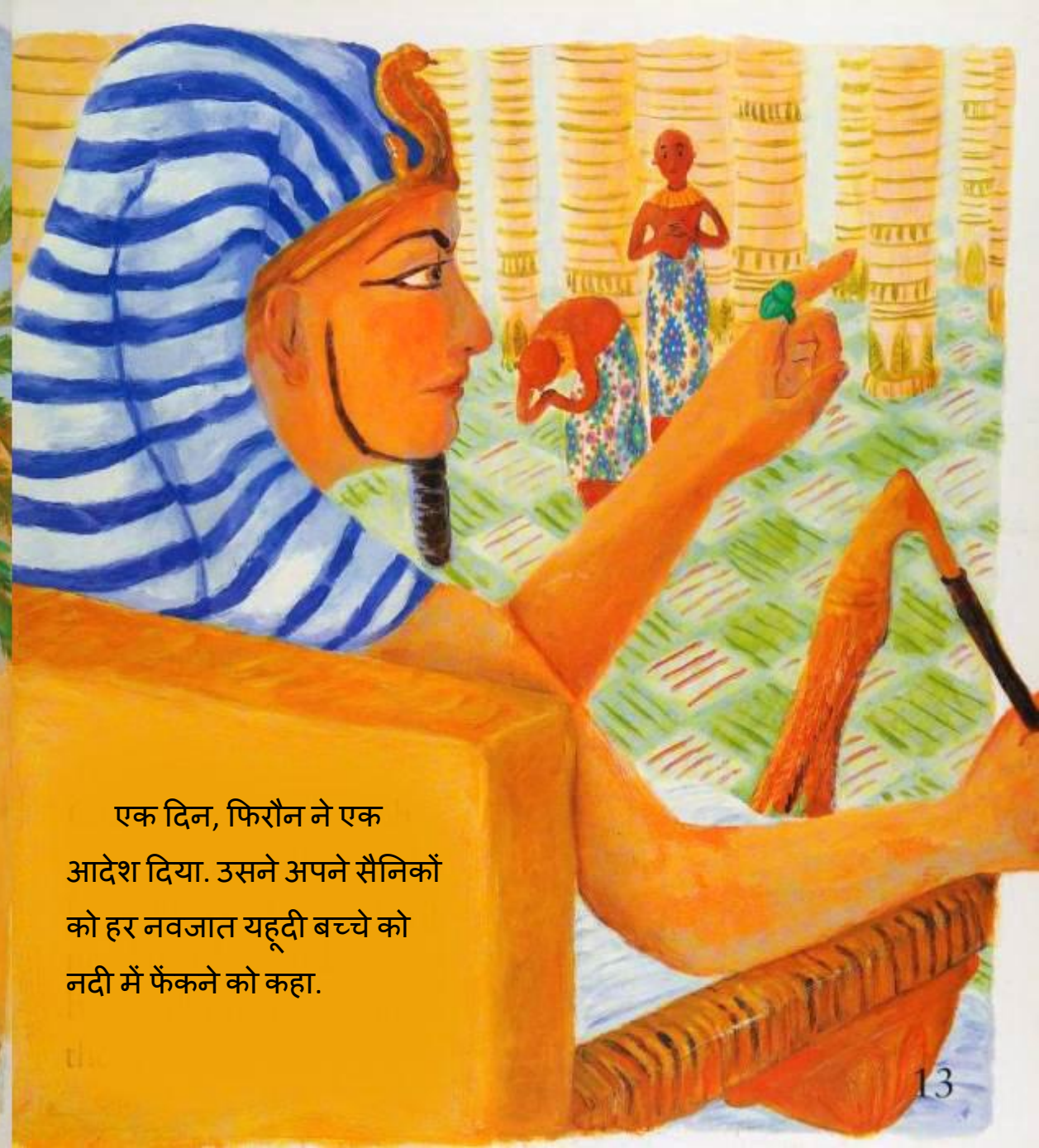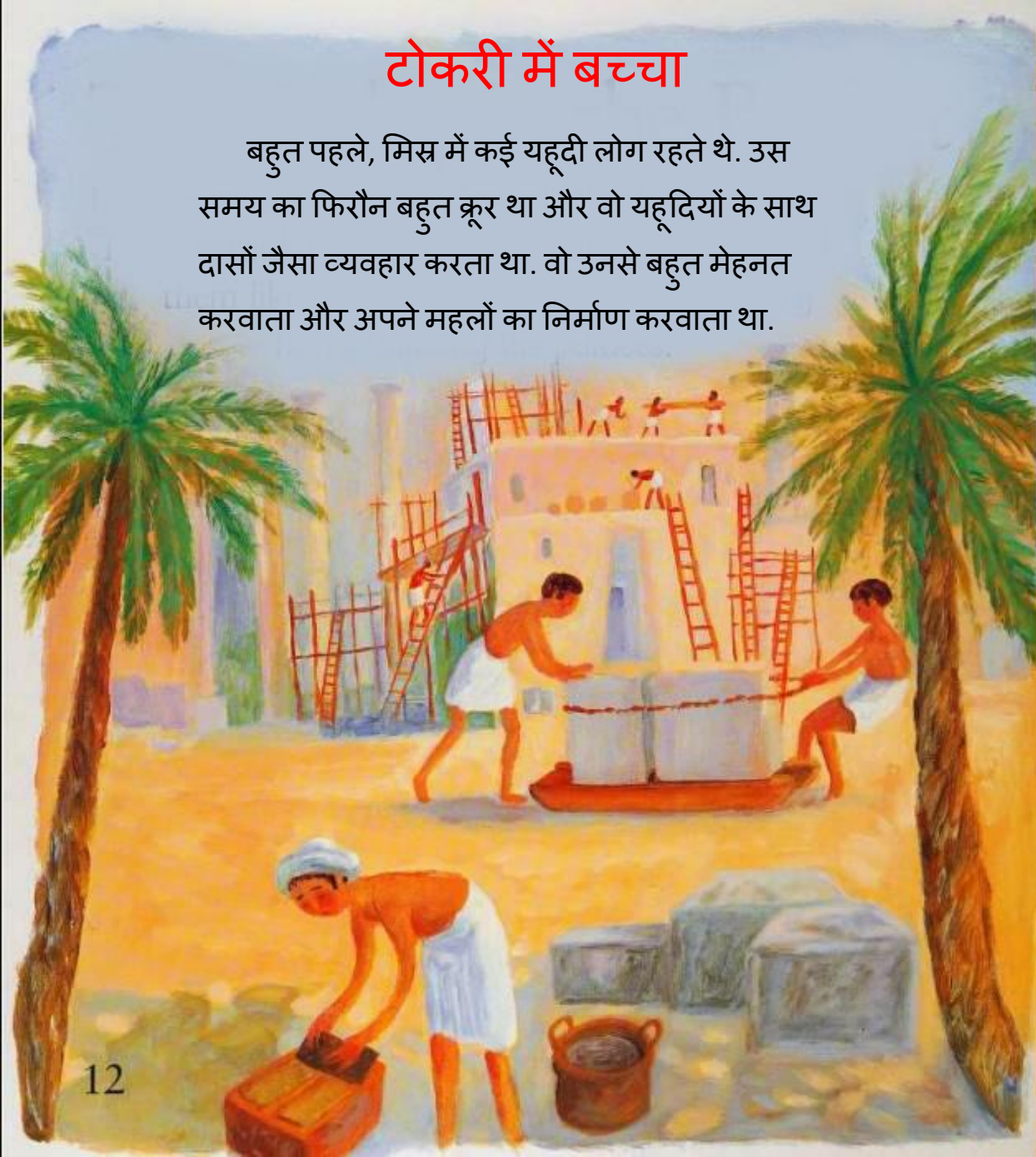
एक दिन, फिरौन ने एक आदेश दिया. उसने अपने सैनिकों को हर नवजात यहूदी बच्चे को नदी में फेंकने को कहा.

उस समय, एक यहूदी महिला का एक छोटा बेटा था. वो नहीं चाहती थी कि सैनिक उसे ढूंढे, इसलिए उसने बच्चे को अपने घर में ही छिपाकर रखा.

जल्द ही लड़का बड़ा हुआ और अब उसके लिए घर में छिपना मुश्किल हो गया. फिर महिला ने अपने बेटे को एक टोकरी में डाला और टोकरी को नदी के किनारे ऊंची घास में छिपा दिया.
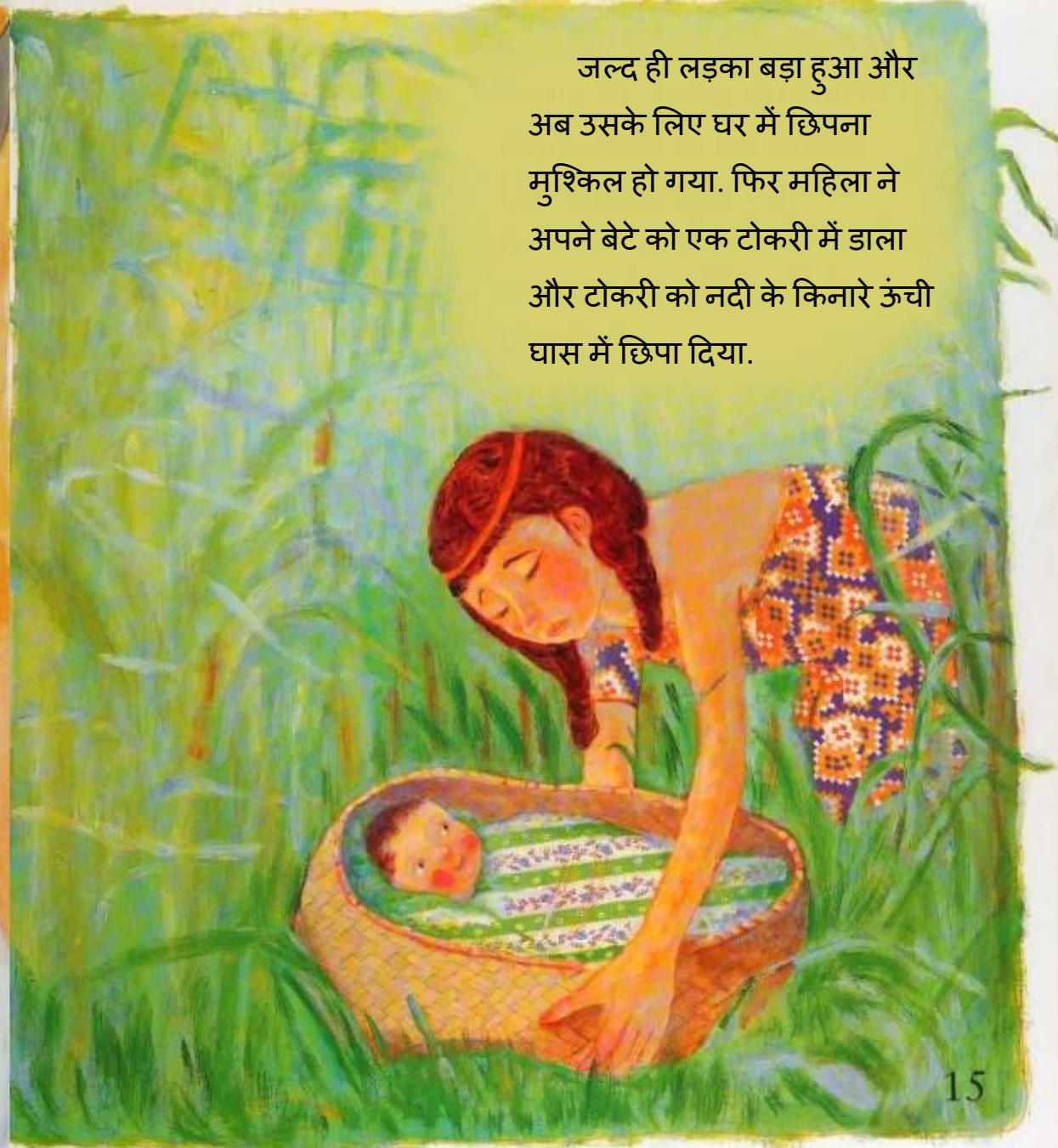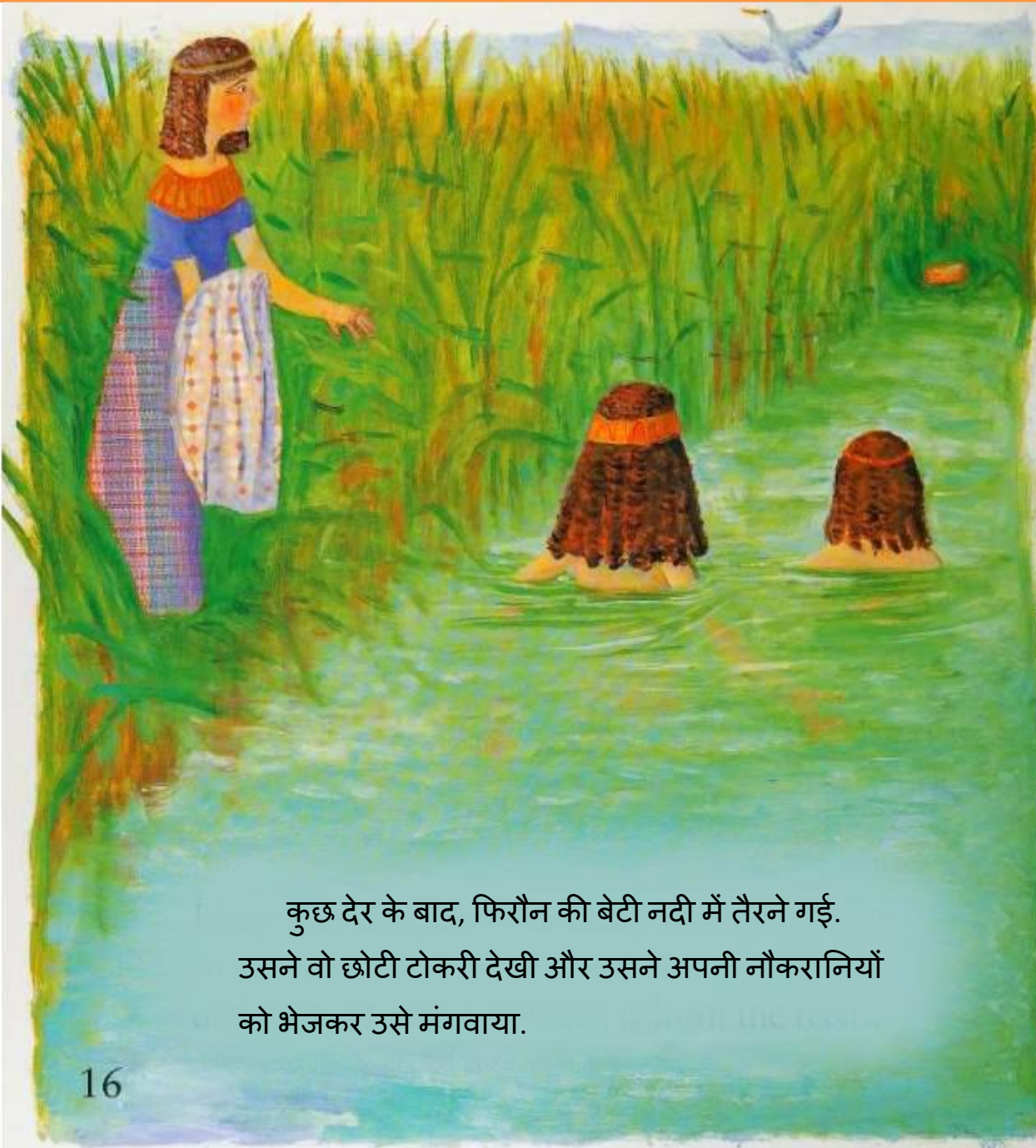
कुछ देर के बाद, फिरौन की बेटी नदी में तैरने गई. उसने वो छोटी टोकरी देखी और उसने अपनी नौकरानियों को भेजकर उसे मंगवाया.
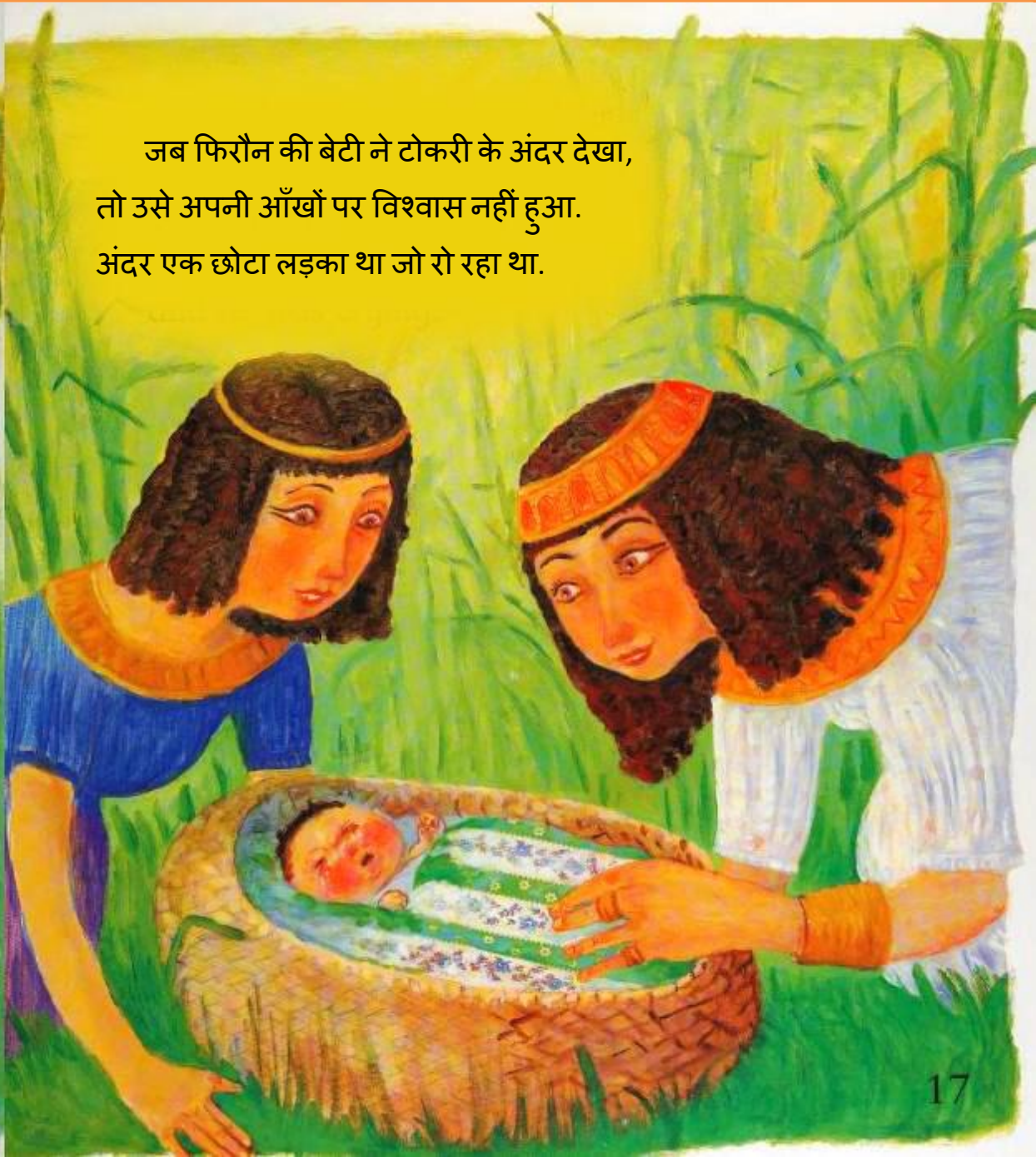
जब फिरौन की बेटी ने टोकरी के अंदर देखा, तो उसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ. अंदर एक छोटा लड़का था जो रो रहा था.

फिरौन की बेटी ने बच्चे को मूसा (मोज़ेस) नाम दिया. वो मूसा (मोज़ेस) को शाही महल में ले गई और उसने उसे अपने बेटे की तरह पाला.

मूसा (मोज़ेस) बड़ा होकर मिस्र का राजकुमार बना, लेकिन वह अपने यहूदी परिवार को कभी नहीं भूला. बाद में, परमेश्वर ने मूसा (मोज़ेस) को यहूदी लोगों के एक महान नेता के रूप में चुना.

एस्थर की कहानी

एक राजा था जिसका एक विशाल राज्य था. वो एक शानदार महल में रहता था. उसकी सुंदर पत्नी का नाम एस्थर था.

हमन नाम का एक व्यक्ति राज्य चलाने में राजा की मदद करता था. हमन हमेशा राजा के साथ विनम्र व्यवहार करता था लेकिन अन्य लोगों के साथ वो बड़ी बदतमीज़ी से पेश आता था. इसलिए कोई भी उसे पसंद नहीं करता था.

धीरे-धीरे हमन खुद को बहुत महत्वपूर्ण समझने लगा. उसने आदेश दिया कि उससे मिलने से पहले लोग उसके सामने झुकें. लेकिन एक यहूदी आदमी जिसका नाम मोर्डेसाई था, उसने हमन के सामने झुकने से मना कर दिया.
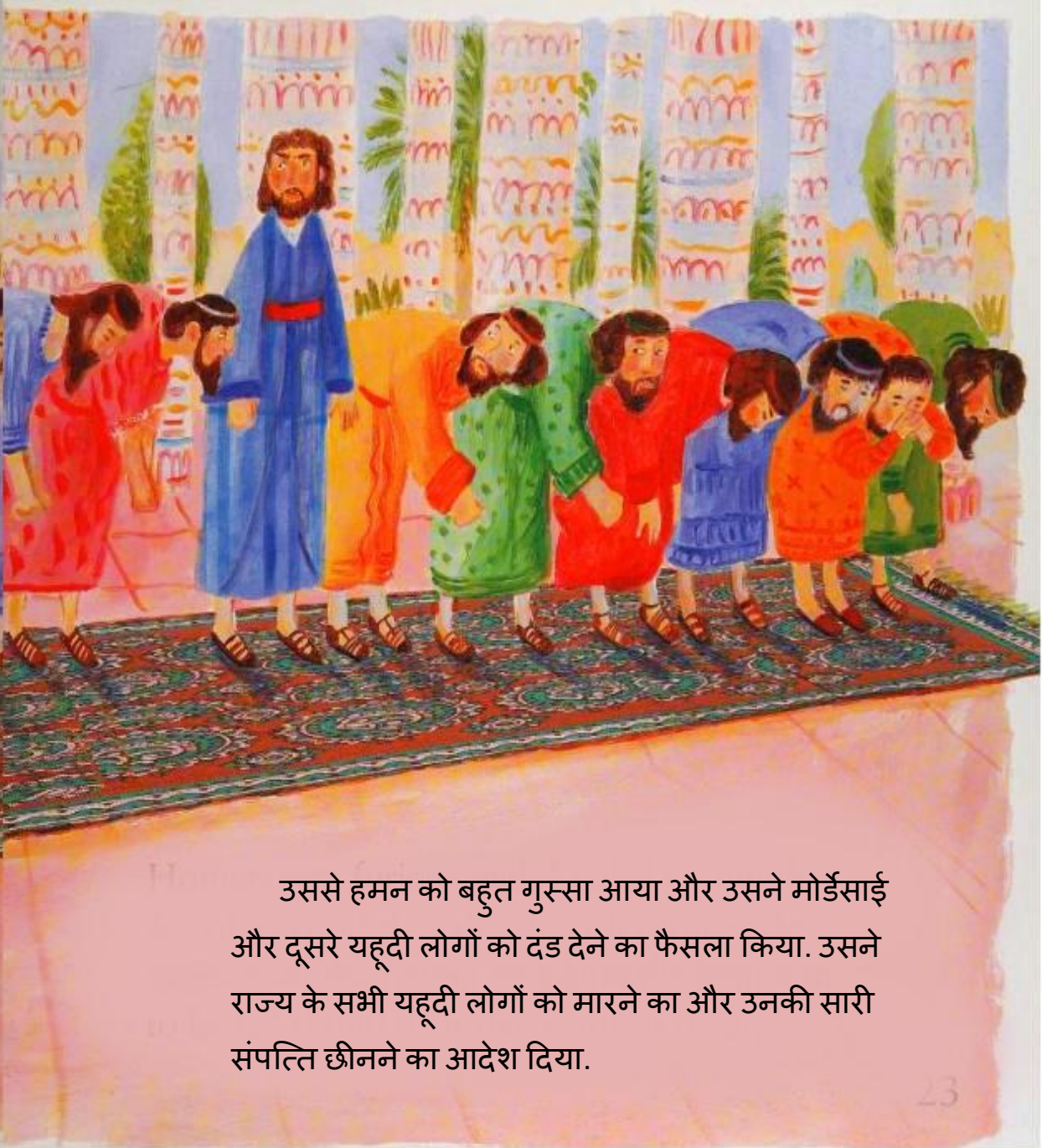
उससे हमन को बहुत गुस्सा आया और उसने मोर्डेसाई और दूसरे यहूदी लोगों को दंड देने का फैसला किया. उसने राज्य के सभी यहूदी लोगों को मारने का और उनकी सारी संपत्ति छीनने का आदेश दिया.

उससे यहूदी लोग बहुत भयभीत हुए. मोर्डेसाई ने रानी एस्थर से उन्हें बचाने की भीख मांगी. रानी यहूदी थी, लेकिन राजा को यह पता नहीं था.
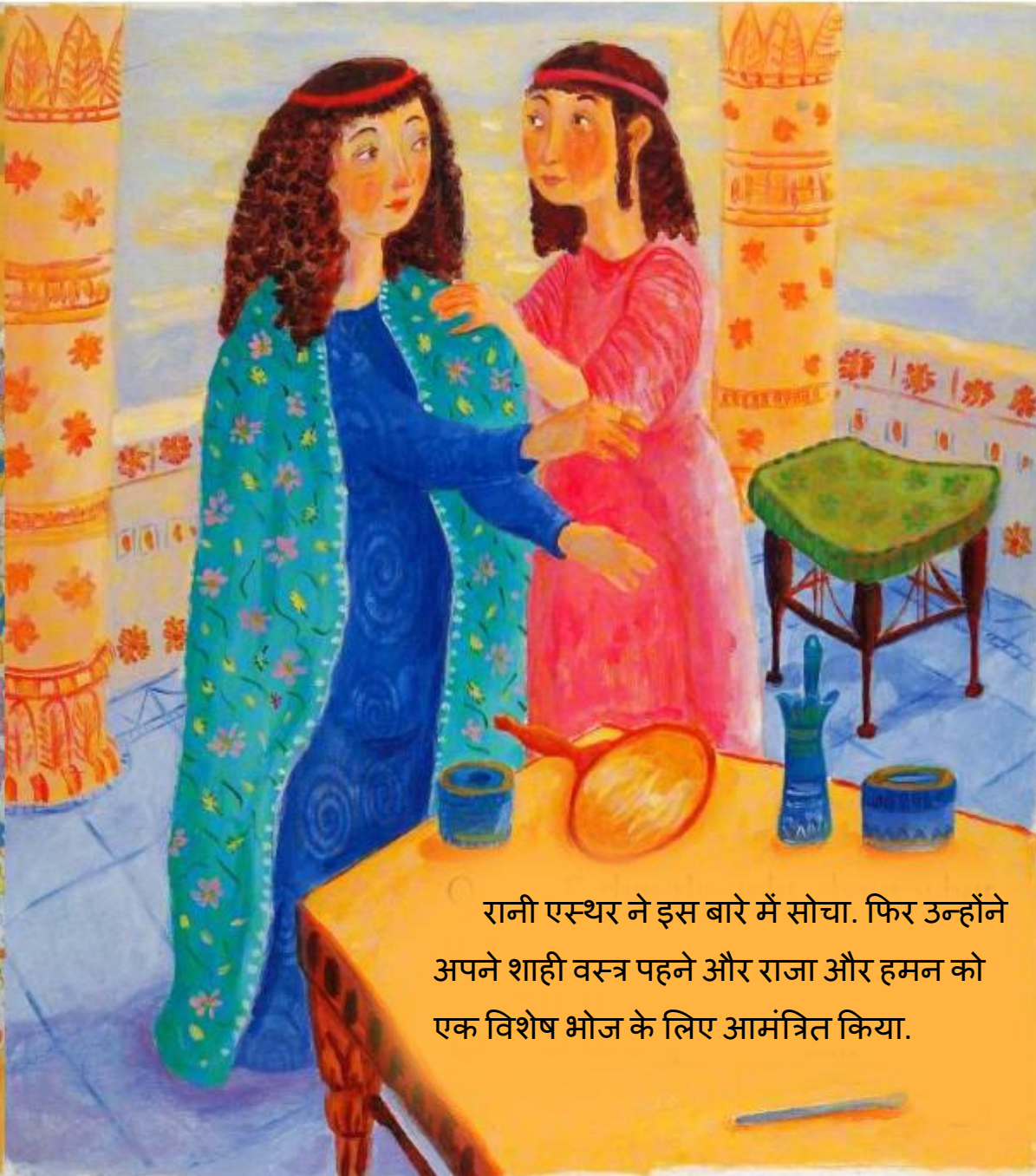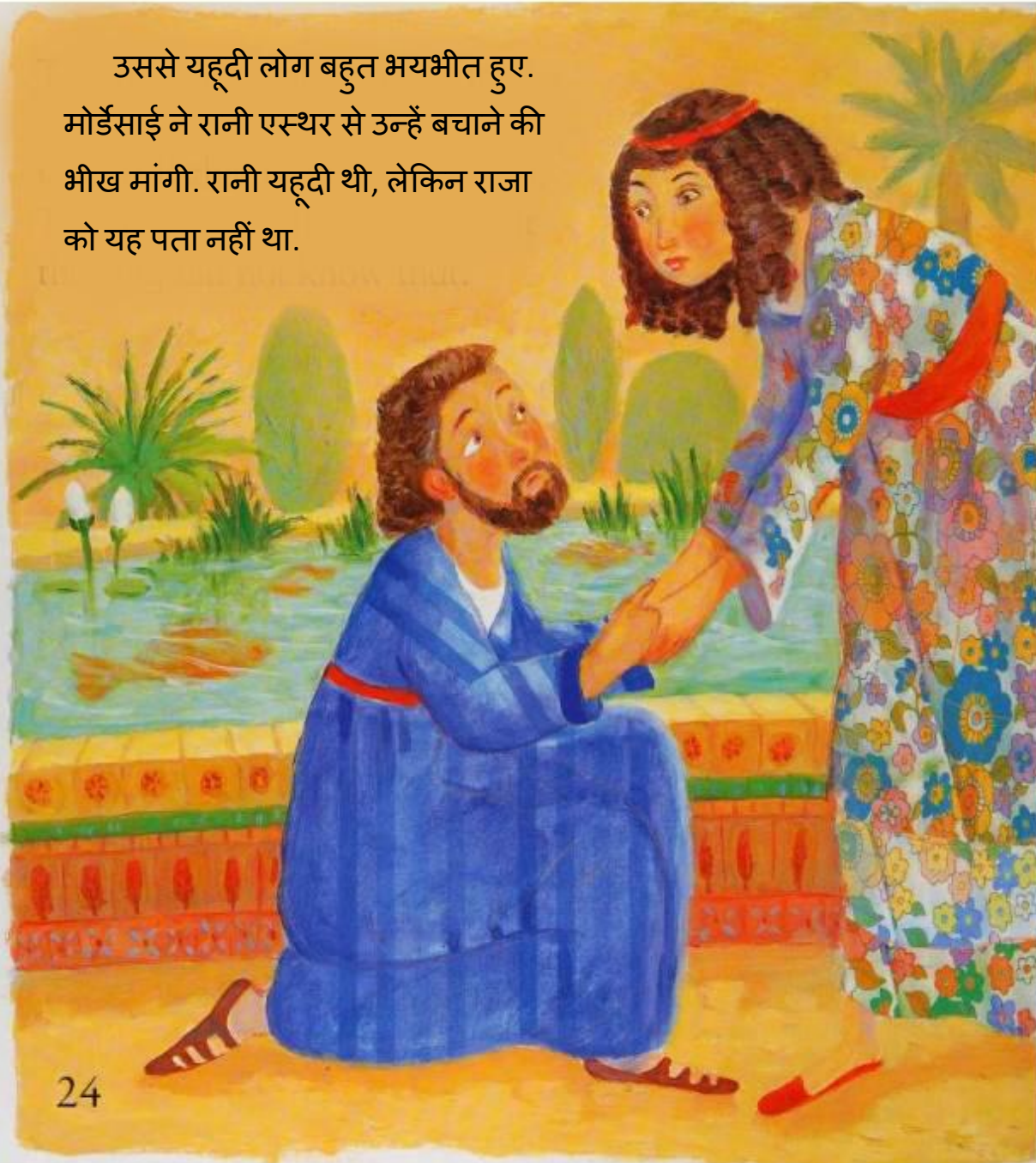
रानी एस्थर ने इस बारे में सोचा. फिर उन्होंने अपने शाही वस्त्र पहने और राजा और हमन को एक विशेष भोज के लिए आमंत्रित किया.

दावत में, बहादुर रानी एस्थर ने राजा को हमन की दुष्ट योजना के बारे में बताया. उन्होंने राजा को बताया कि वो खुद यहूदी थीं और उन्होंने राजा से सभी यहूदी लोगों का जीवन बचाने की प्रार्थना की.
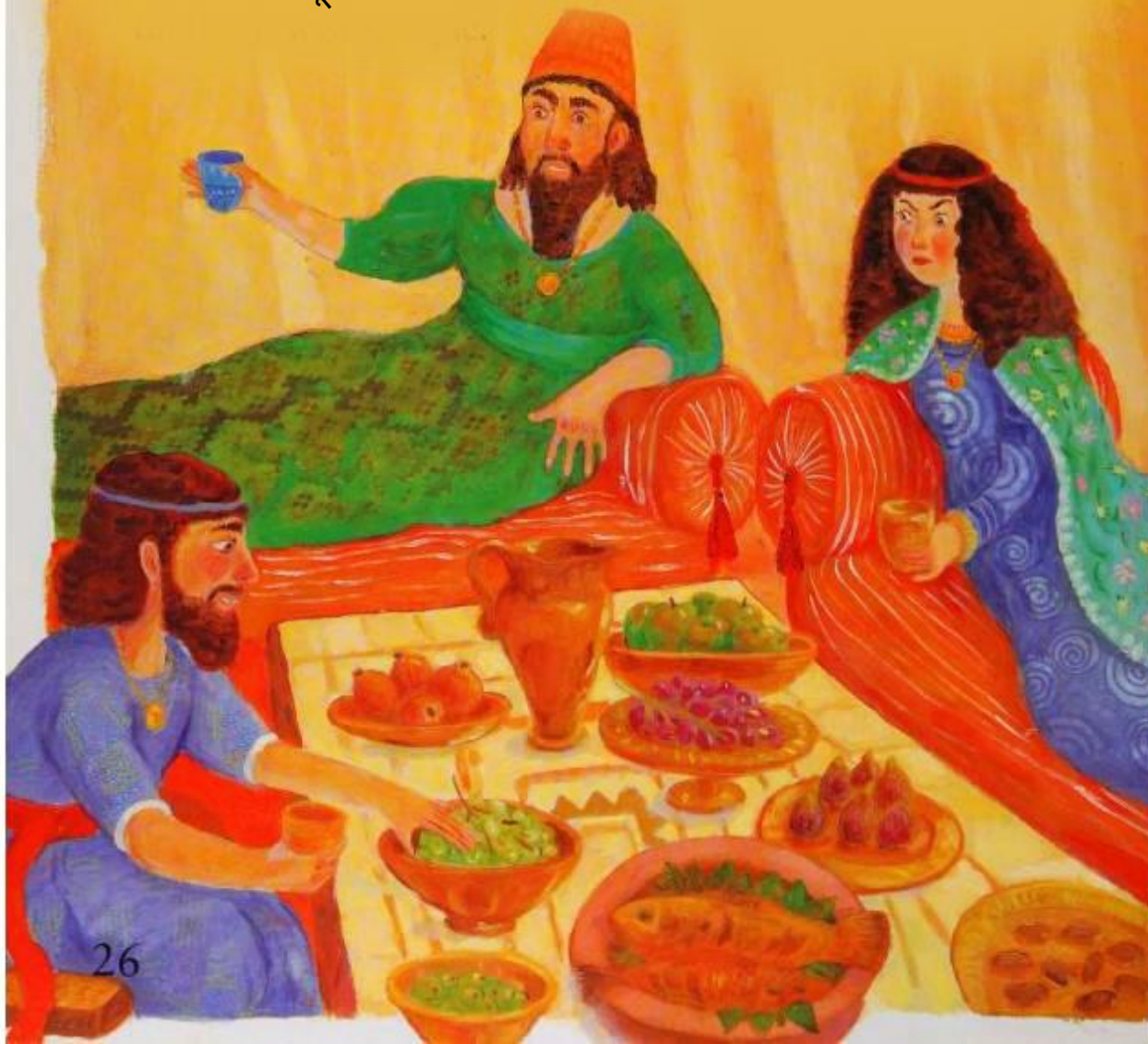
राजा, हमन से बहुत नाराज हुए. उन्होंने दुष्ट हमन को राज्य से बाहर निकालने का आदेश दिया. उसके बाद से राजा ने राज्य के शासन में मोर्डेसाई की सेवाएं लीं.
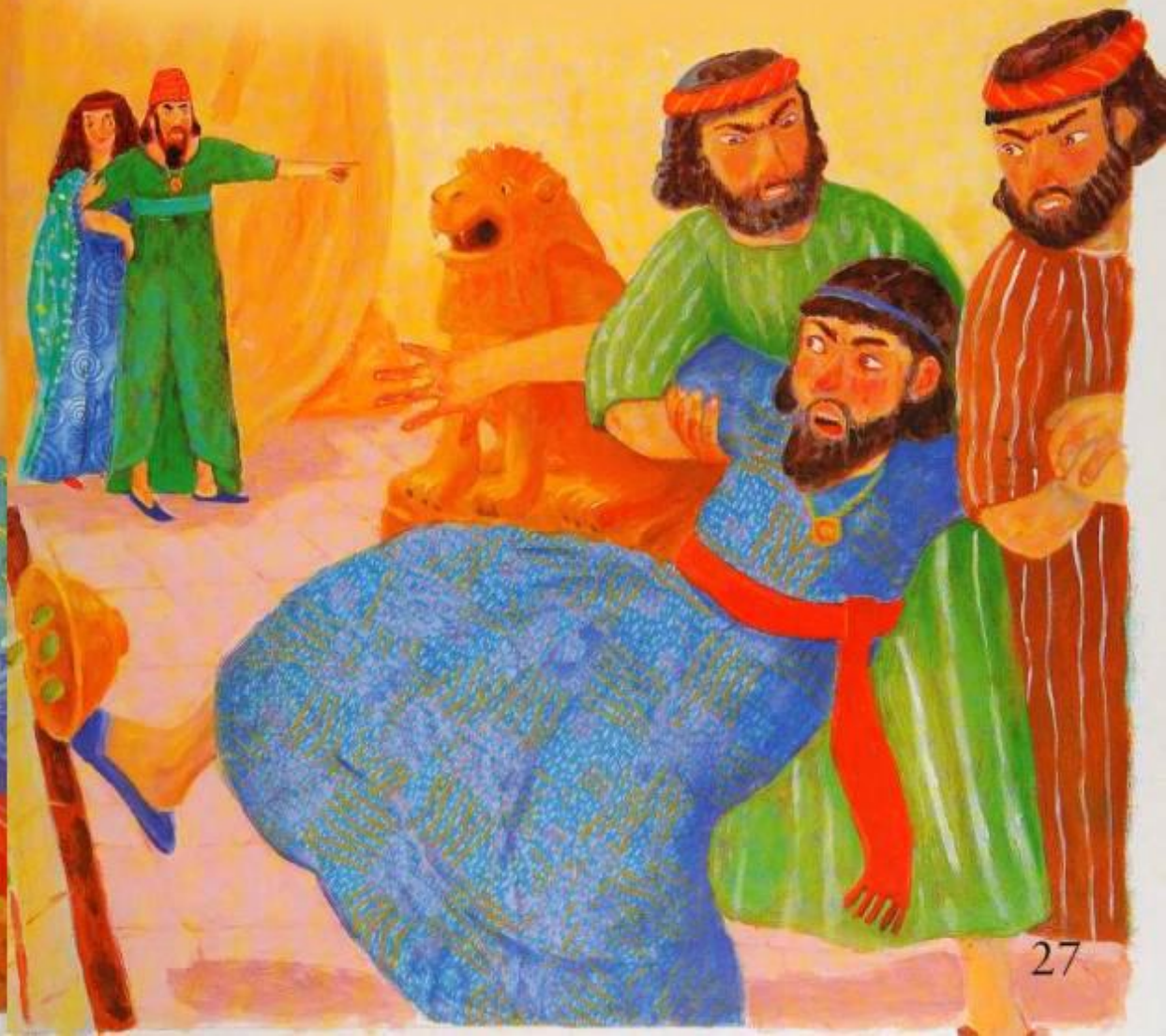
मंदिर का दीपक

बहुत पहले, एक यूनानी (ग्रीक) राजा ने यरूशलेम में यहूदी लोगों पर शासन किया. उसने यहूदियों को अपना धर्म त्यागने का आदेश दिया. राजा ने यहूदियों से कहा कि वे अपने भगवान की पूजा करना बंद करें. उसकी बजाए वे राजा के कुलदेव की प्रार्थना करें.
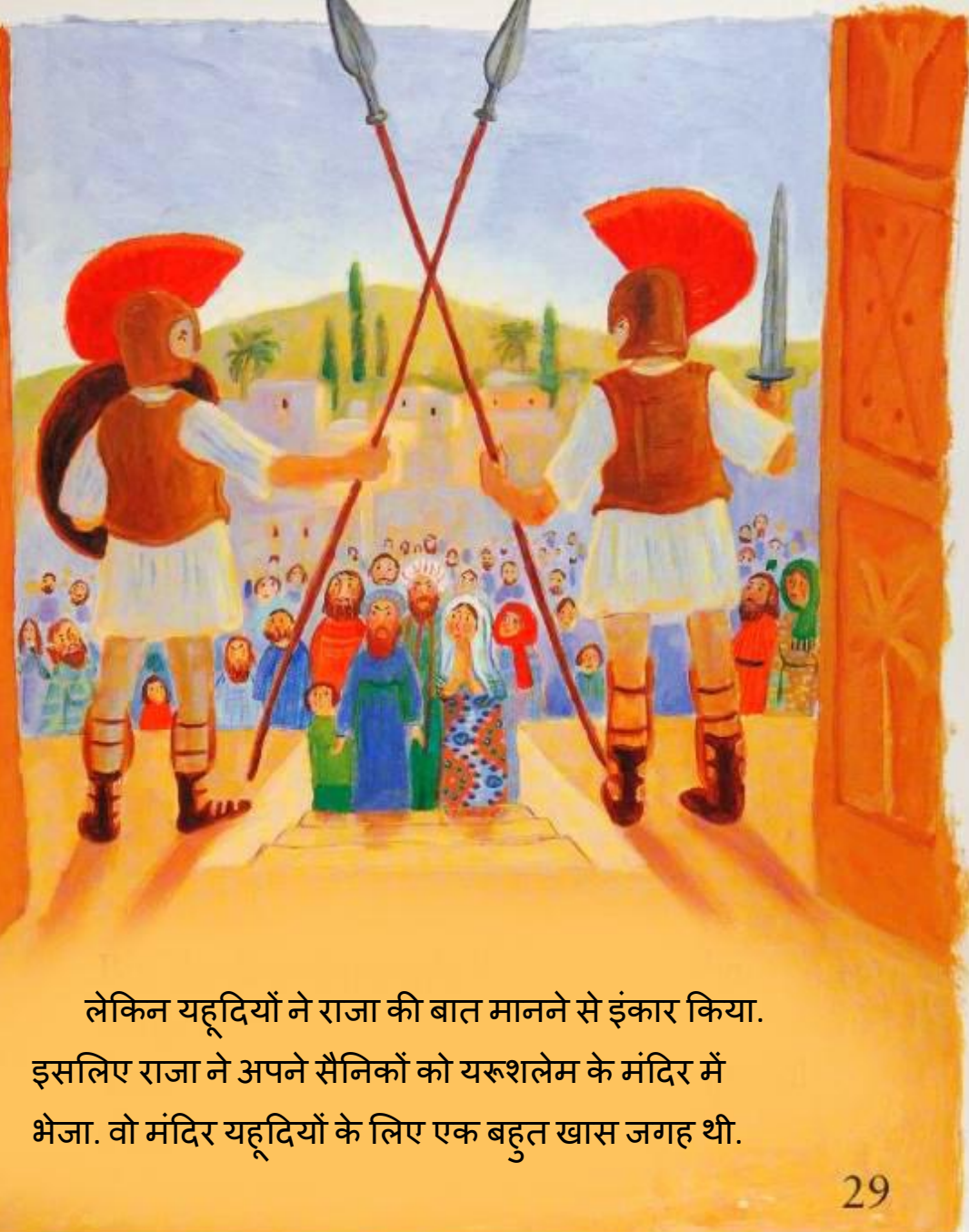
लेकिन यहूदियों ने राजा की बात मानने से इंकार किया. इसलिए राजा ने अपने सैनिकों को यरूशलेम के मंदिर में भेजा. वो मंदिर यहूदियों के लिए एक बहुत खास जगह थी.

सैनिकों ने मंदिर को तोड़ डाला और उसका खजाना लूट लिया. फिर उन्होंने मंदिर में हमेशा जलते रहने वाले तेल के दीपक को बुझा दिया. जलता दीपक वहां भगवान की उपस्थिति को दर्शाता था.
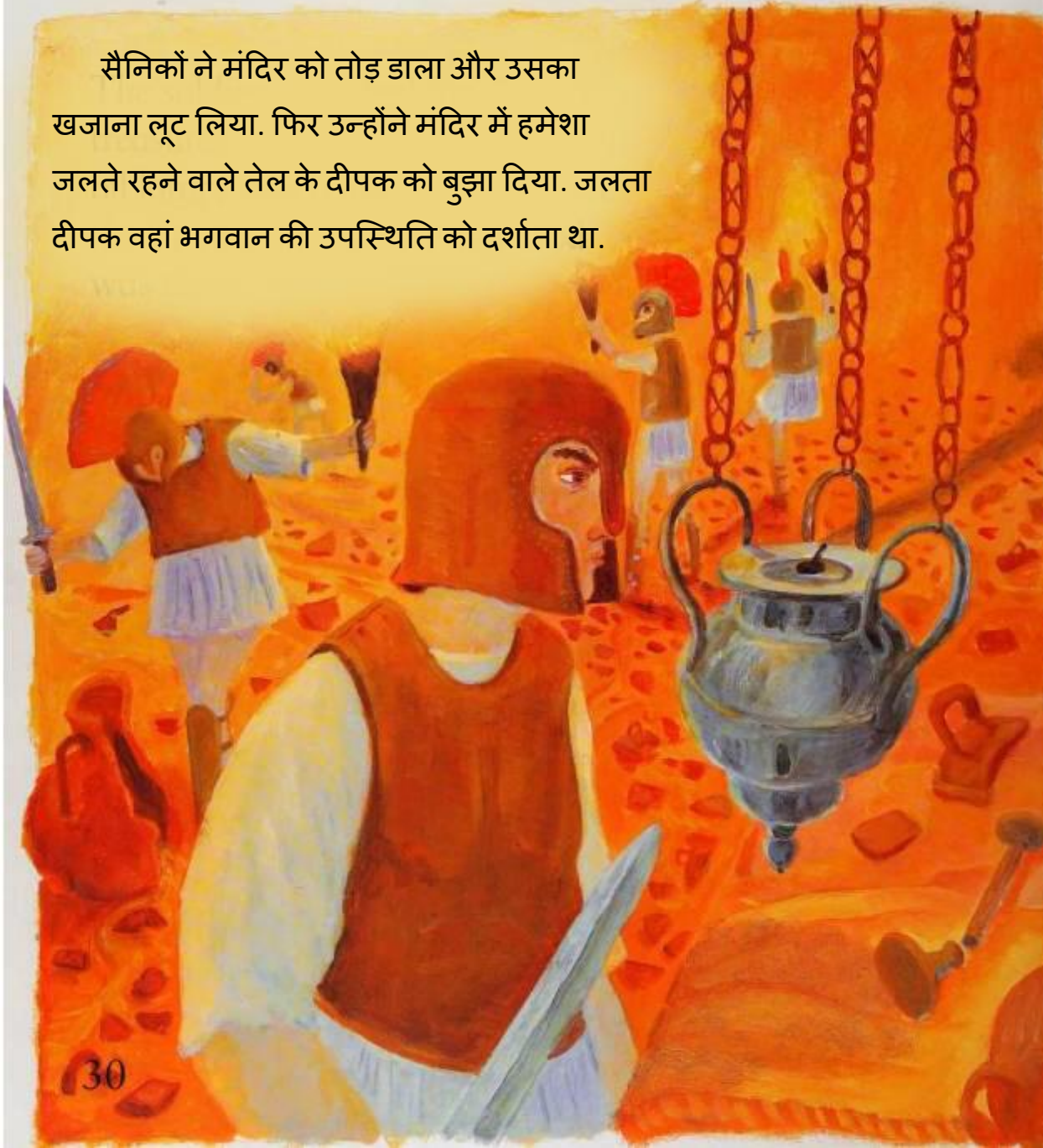
फिर जुडाह नामक एक बहुत बहादुर यहूदी ने यहूदियों की सेना का नेतृत्व किया. अंत में उन्होंने यूनानी सैनिकों को यरूशलेम से बाहर निकाल फेंका.
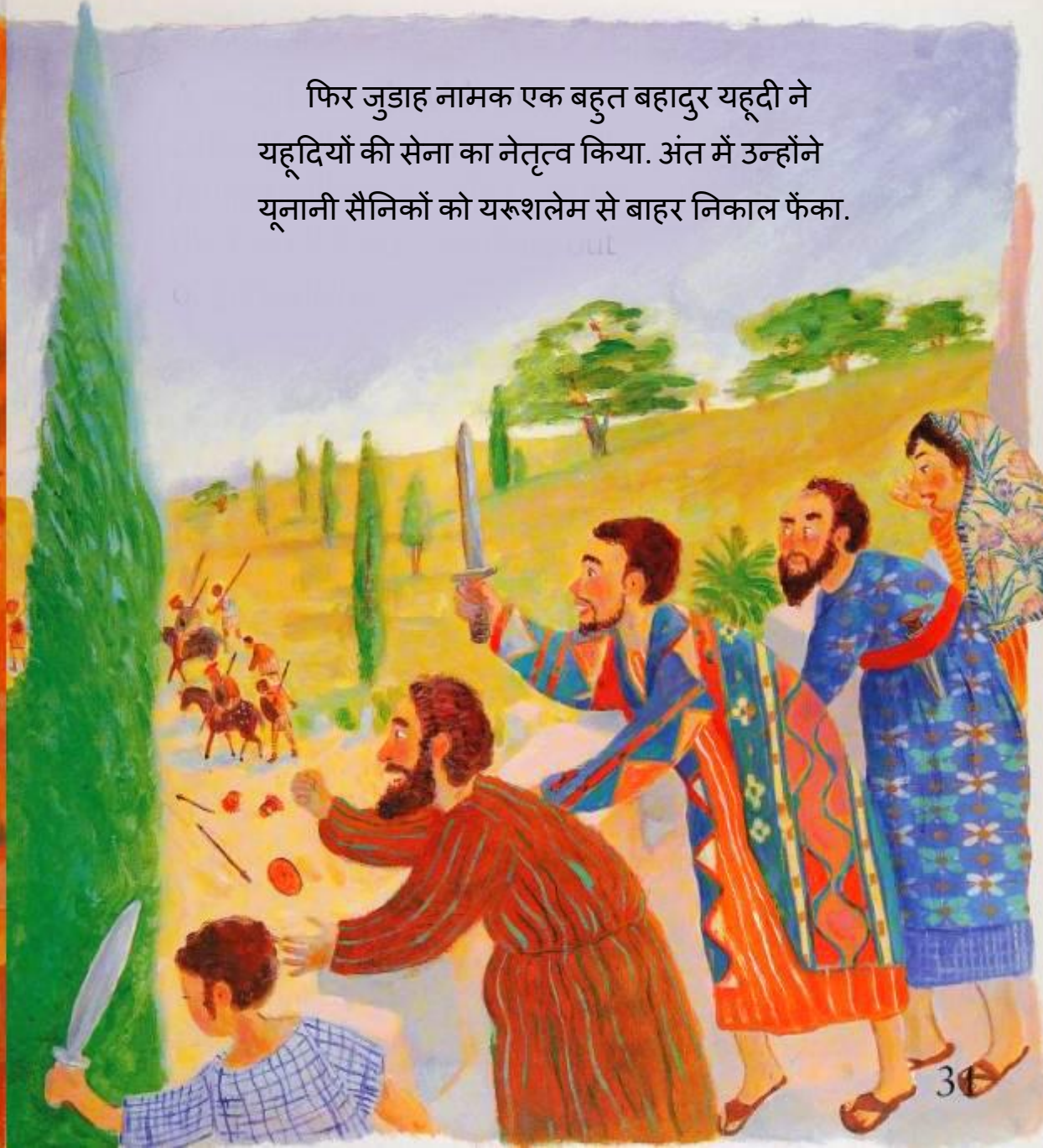
जुडाह और उसके अनुयायियों ने मंदिर की सफाई की ताकि यहूदी लोग फिर से वहाँ पूजा कर सकें. फिर जुडाह ने मंदिर के दीपक को दुबारा जलाने के लिए कुछ तेल खोजा.

लेकिन सैनिकों ने तेल से सभी जग तोड़ डाले थे और तेल फेंक दिया था. फिर जुडाह को एक छोटा प्याला मिला, जिसकी तली में अभी भी थोड़ा तेल बचा था.

लेकिन उतना तेल दीपक को केवल एक दिन जलाने के लिए ही पर्याप्त था. अतिरिक्त तेल लाने में उन्हें कम-से-कम आठ दिन लगते. उस स्थिति में जुडाह क्या करे?
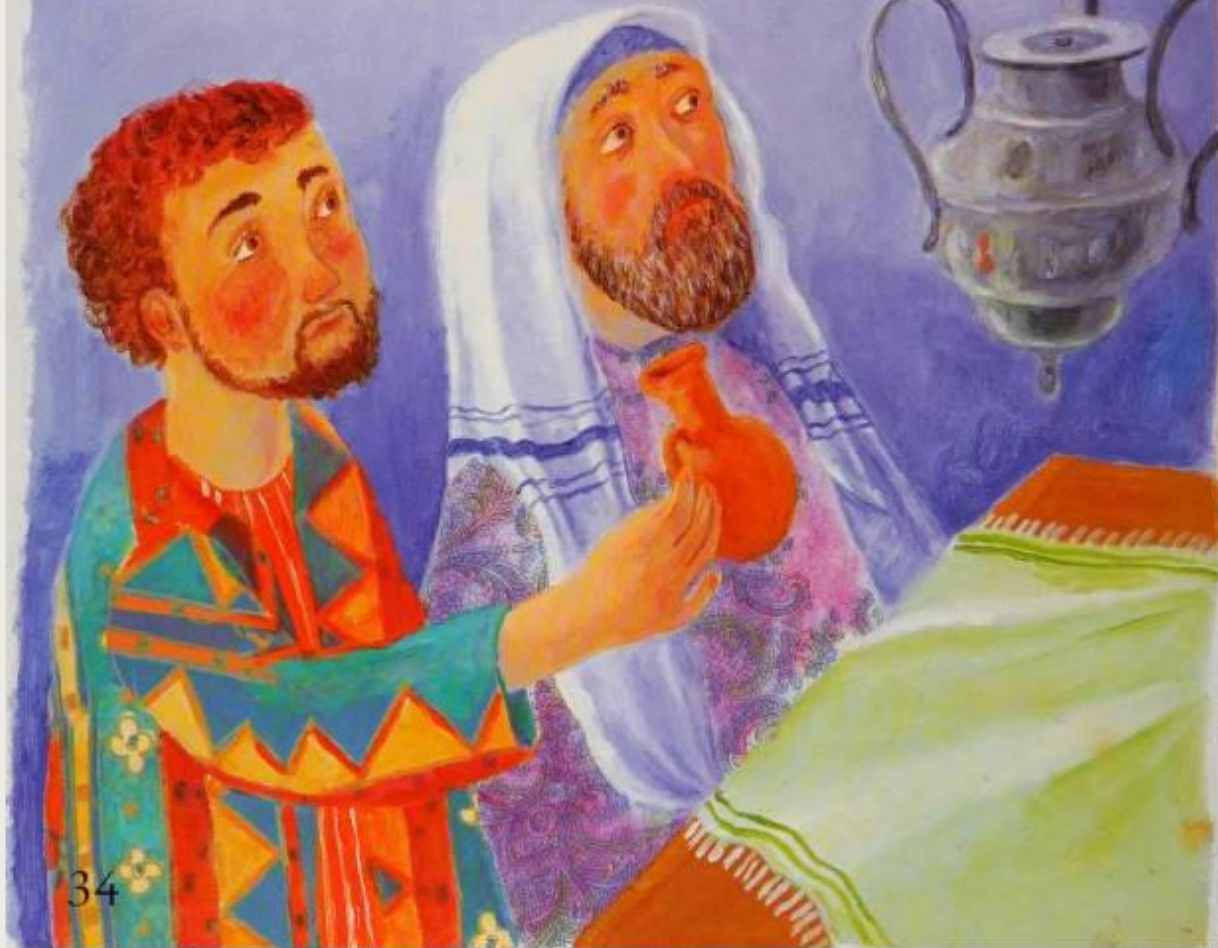
जुडाह ने दीपक जलाया. फिर एक आश्चर्यजनक बात हुई. एक दिन ख़त्म होने के बाद भी दीपक बुझा नहीं! जब तक जुडाह तेल लेकर लौटा नहीं, तब तक परमेश्वर ने दीपक को जलाए रखा.

समाप्त